पाठ 33

1. परमेश्वर ने मूसा से क्या वादा किया जब उसने सीनै पर्वत पर जलती हुई झाड़ी से मूसा से बात की?

-परमेश्वर ने वादा किया कि वह मूसा को सिनाई पर्वत पर वापस लाएगा।

2. क्या परमेश्वर ने मूसा को सीनै पर्वत पर वापस लाने के अपने वादे को पूरा किया?

-हां।

3. पहाड़ की चोटी पर परमेश्वर ने मूसा से क्या कहा?

-परमेश्वर इस्राएलियों के साथ एक वाचा करना चाहता था।

4. वह कौन सी वाचा थी जिसे परमेश्वर इस्राएलियों के साथ करना चाहता था?

-परमेश्वर ने कहा कि अगर इस्राएली उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो वह उन्हें आशीर्वाद देगा।

5. यदि इस्राएली उसकी सब आज्ञाओं का पालन नहीं करते, तो परमेश्वर क्या करता?

-परमेश्वर उन्हें सजा देंगे।

6. तब इस्राएलियों ने परमेश्वर से क्या कहा?

-इस्राएलियों ने परमेश्वर से कहा कि वे उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करेंगे।

7. क्या इस्राएलियों ने सोचा था कि वे परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम हैं?

-हां।

8. इस्राएलियों ने क्यों सोचा कि वे परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम हैं?

-क्योंकि वे अभिमानी और अभिमानी थे।

9. क्या इस्राएली परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम थे?

-नहीं।

10. इस्राएली परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम क्यों नहीं थे?

-क्योंकि वे आदम और हव्वा के बच्चे पैदा हुए थे।

-क्योंकि वे जन्म से ही पाप के दास थे।

-क्योंकि वे पैदाइशी शैतान के गुलाम थे।

11. क्या परमेश्वर जानता था कि इस्राएली उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम नहीं थे?

-हां।

12. यदि परमेश्वर जानता था कि इस्राएली उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम नहीं थे, तो परमेश्वर इस्राएलियों के साथ एक वाचा क्यों करना चाहता था?

-परमेश्वर इस्राएलियों के साथ एक वाचा करना चाहता था क्योंकि वह इस्राएलियों को शिक्षा देना चाहता था।

13. परमेश्वर इस्राएलियों को क्या सिखाना चाहता था?

-परमेश्वर इस्राएलियों को यह सिखाना चाहता था कि वे कभी भी उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम नहीं थे।

-परमेश्वर इस्राएलियों को सिखाना चाहता था कि वे कभी भी उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम नहीं थे क्योंकि वे पाप में पैदा हुए थे।

-परमेश्वर इस्राएलियों को यह सिखाना चाहता था कि क्योंकि वे उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम नहीं थे, केवल परमेश्वर ही उन्हें मृत्यु से बचाने में सक्षम था।

14. यदि वे सीनै पर्वत को छूते हैं तो इस्राएली क्यों मरेंगे?

-क्योंकि परमेश्वर पहाड़ पर उतर रहे थे।

-क्योंकि परमेश्वर पवित्र हैं।

-क्योंकि परमेश्वर सभी पापों से घृणा करता है।

-क्योंकि परमेश्वर सभी पापों को मौत के घाट उतार देते हैं।

15. गड़गड़ाहट, बिजली, धुआं और आग के संकेत क्या थे?

-वह परमेश्वर पवित्र है।

-कि परमेश्वर सभी पापों से नफरत करता है।

-कि परमेश्वर सभी पापों को मौत के घाट उतार देता है।

-परमेश्वर से बात करने के बाद मूसा पहाड़ की तलहटी में लौट आया था।

-पहाड़ के पास आसमान में गरज-चमक चलती रही।

-पहाड़ के चारों ओर हवा में बिजली भरती रही।

-घने धुएं ने पहाड़ को पूरी तरह ढकना जारी रखा।

-पूरा पहाड़ हिंसक रूप से हिलता रहा।

-इस्राएली पहाड़ से दूर रहे, क्योंकि वे बहुत डरे हुए थे।

-तब परमेश्वर ने पर्वत से इस्राएलियों से बातें कीं।

-सीनै पर्वत की चोटी से, परमेश्वर ने इस्राएलियों को क्या दिया?

-दस धर्मादेश।

आइए पढ़ें निर्गमन 20:1-2

1-और परमेश्वर ने ये सब वचन कहे:

2- मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के देश में से मिस्र से निकाल लाया है।

-यहाँ पहली आज्ञा है जो परमेश्वर ने दी है:

आइए पढ़ें निर्गमन 20:3

3-“मेरे साम्हने तेरा कोई और देवता न होगा।”

-पहली आज्ञा में, परमेश्वर आज्ञा देता है कि वह अकेला ही हमारा परमेश्वर है।

-परमेश्वर अकेले हमारे परमेश्वर क्यों हैं?

-क्योंकि एक ही ईश्वर है।

-क्योंकि कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है।

-जब हम आत्माओं से प्रार्थना करते हैं, तो हम आत्माओं को परमेश्वर के सामने रखते हैं और इस आज्ञा को तोड़ते हैं।

-जब हम एक आकर्षण पर भरोसा करते हैं, तो हम उस आकर्षण को परमेश्वर के सामने रख रहे हैं, और इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-जब हम परमेश्वर के रास्ते पर जाने के बजाय अपने रास्ते जाते हैं, तो हम खुद को परमेश्वर के सामने रख रहे हैं, और इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-जब हम अपने जीवन के हर दिन परमेश्वर को अपना परमेश्वर नहीं होने देते हैं, तो हम इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-परमेश्वर कहते हैं कि सभी लोगों ने इस आज्ञा को तोड़ा है।

-इस आज्ञा को तोड़ने की सजा अनन्त आग की झील में मौत है।

-यहाँ दूसरी आज्ञा है जो परमेश्वर ने दी है:

आइए पढ़ें निर्गमन 20:4-5

4-“ऊपर स्वर्ग में या नीचे पृथ्वी पर या नीचे के जल में किसी भी चीज़ के रूप में आप अपने लिए मूर्ति मत बनाना।

5 तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनको दण्डवत् करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा ईर्ष्यालु परमेश्वर हूं, जो मुझ से बैर रखनेवालों की तीसरी और चौथी पीढ़ी को पितरोंके पाप का दण्ड देता है।”

- दूसरी आज्ञा में, ईश्वर हमें आज्ञा देता है कि हम लकड़ी या पत्थर की कोई मूर्ति न बनाएं और न ही उनकी पूजा करें।

-परमेश्वर की तरह दिखने के लिए हमें एक छवि क्यों नहीं बनानी चाहिए?

-क्योंकि ईश्वर आत्मा है।

-क्योंकि परमेश्वर किसी व्यक्ति, या जानवर, या पक्षी की तरह नहीं दिखता है।

-जब हम परमेश्वर के बजाय परमेश्वर द्वारा बनाई गई पूजा करते हैं, तो हम परमेश्वर के सामने परमेश्वर की रचना कर रहे हैं, और इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-जब हम हर दिन परमेश्वर की पूजा नहीं करते हैं, बल्कि अपने विचारों या दूसरों के विचारों का पालन करते हैं, तो हम इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-परमेश्वर कहते हैं कि सभी लोगों ने इस आज्ञा को तोड़ा है।

-इस आज्ञा को तोड़ने की सजा अनन्त आग की झील में मौत है।

-यहाँ तीसरी आज्ञा है जो परमेश्वर ने दी है:

आइए पढ़ें निर्गमन 20:7

7-"तू अपके परमेश्वर यहोवा के नाम का दुरूपयोग न करना, क्योंकि यहोवा किसी को निर्दोष न ठहराएगा, जो उसके नाम का दुरूपयोग करता है।"

-तीसरी आज्ञा में, ईश्वर हमें आज्ञा देता है कि बिना सम्मान के ईश्वर का नाम न कहें।

-हमें परमेश्वर के नाम का सम्मान क्यों करना चाहिए?

-क्योंकि परमेश्वर का नाम और परमेश्वर एक ही हैं।

-क्योंकि परमेश्वर का नाम और परमेश्वर एक हैं।

-जब हम परमेश्वर का नाम सम्मान से नहीं कहते हैं, तो हम परमेश्वर का सम्मान नहीं कर रहे हैं, और इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-जब हम लापरवाही से परमेश्वर का नाम लेते हैं, तो हम परमेश्वर के साथ लापरवाही से व्यवहार कर रहे हैं, और इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-बच्चे के लिए अपने बड़ों का सम्मान न करना बुरा है।

-परमेश्वर का सम्मान न करना किसी के लिए बहुत बुरा है।

-परमेश्वर कहते हैं कि सभी लोगों ने इस आज्ञा को तोड़ा है।

-इस आज्ञा को तोड़ने की सजा अनन्त आग की झील में मौत है।

-यहाँ चौथी आज्ञा है जो परमेश्वर ने दी है:

आइए पढ़ें निर्गमन 20:8-11

8- “सब्त के दिन को पवित्र रखकर स्मरण रखना।

9 छः दिन तक परिश्रम करना और अपना सब काम करना,

10 परन्तु सातवाँ दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है। उस पर न तो तू, न तेरा बेटा या बेटी, न तेरा दास, न दासी, न पशु, और न परदेशी तेरे फाटकोंके भीतर कोई काम करना।

11-क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी, समुद्र और जो कुछ उन में है सब को बनाया, परन्तु सातवें दिन विश्राम किया। इसलिथे यहोवा ने सब्त के दिन को आशीष दी और उसे पवित्र ठहराया।”

-चौथी आज्ञा में, परमेश्वर हमें सातवें दिन को विश्राम के विशेष दिन के रूप में रखने की आज्ञा देता है।

-हमें सप्ताह में एक दिन आराम क्यों करना चाहिए?

-क्योंकि परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को छह दिनों में बनाया, और फिर सातवें दिन विश्राम किया।

-परमेश्वर हमें सातवें दिन आराम करने की आज्ञा देते हैं ताकि हम उन सभी चीजों के बारे में सोच सकें जो परमेश्वर ने हमारे लिए बनाई हैं।

-जब हम आराम नहीं करते और परमेश्वर के बारे में सोचते हैं, तो हम इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-जब हम आराम नहीं करते और सोचते हैं कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया है, तो हम इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-परमेश्वर कहते हैं कि सभी लोगों ने इस आज्ञा को तोड़ा है।

-इस आज्ञा को तोड़ने की सजा अनन्त आग की झील में मौत है।

-यहां पांचवीं आज्ञा है जो परमेश्वर ने दी है:

आइए पढ़ें निर्गमन 20:12

12 अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन तक जीवित रहे।

-पांचवें आदेश में, परमेश्वर हमें अपने पिता और माता का सम्मान करने की आज्ञा देते हैं।

-हमें अपने पिता और माता का सम्मान क्यों करना चाहिए?

-क्योंकि परमेश्वर ने हमें पालने के लिए हमारे माता-पिता दिए हैं।

-जब हम अपने पिता की पूरी तरह से आज्ञा नहीं मानते हैं, तो हम इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-जब हम अपनी माताओं की पूरी तरह से आज्ञा नहीं मानते हैं, तो हम इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-परमेश्वर कहते हैं कि सभी लोगों ने इस आज्ञा को तोड़ा है।

-इस आज्ञा को तोड़ने की सजा अनन्त आग की झील में मौत है।

-यहाँ छठी आज्ञा है जो परमेश्वर ने दी है:

आइए पढ़ें निर्गमन 20:13

13- "तुम हत्या नहीं करना।"

-छठी आज्ञा में, परमेश्वर हमें किसी अन्य व्यक्ति को न मारने की आज्ञा देते हैं।

-हमें दूसरे व्यक्ति को क्यों नहीं मारना चाहिए?

-क्योंकि परमेश्वर वह है जो लोगों को जीवन देता है, और परमेश्वर ही वह है जिसे जीवन लेना चाहिए।

-परमेश्वर के अनुसार, अगर हम किसी दूसरे व्यक्ति से नफरत करते हैं, तो हमने क्या किया है?

-परमेश्वर कहते हैं कि अगर हम किसी दूसरे व्यक्ति से नफरत करते हैं, तो हमने उस व्यक्ति को मार डाला है।

-जब हम दूसरे लोगों से नफरत करते हैं, तो हम इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-परमेश्वर कहते हैं कि सभी लोगों ने इस आज्ञा को तोड़ा है।

-इस आज्ञा को तोड़ने की सजा अनन्त आग की झील में मौत है।

-यहाँ सातवीं आज्ञा है जो परमेश्वर ने दी है:

आइए पढ़ें निर्गमन 20:14

14-"व्यभिचार न करना।"

-सातवीं आज्ञा में, परमेश्वर हमें अपने जीवन साथी को छोड़कर किसी अन्य व्यक्ति के साथ नहीं सोने की आज्ञा देते हैं।

-हमें अपने जीवनसाथी के अलावा किसी और के साथ क्यों नहीं सोना चाहिए?

-क्योंकि परमेश्वर ने एक स्त्री को एक पुरुष को, और एक पुरुष को एक स्त्री को दिया है।

-परमेश्वर के अनुसार, अगर हम किसी दूसरे व्यक्ति को देखते हैं और उसके साथ सोना चाहते हैं, तो हमने क्या किया है?

-परमेश्वर कहते हैं कि अगर हम दूसरे व्यक्ति को देखते हैं और उनके साथ सोना चाहते हैं, तो हमने उनके साथ व्यभिचार किया है।

-जब हम किसी दूसरे व्यक्ति को देखते हैं, और उनके साथ सोना चाहते हैं, तो हम इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-परमेश्वर कहते हैं कि सभी लोगों ने इस आज्ञा को तोड़ा है।

-इस आज्ञा को तोड़ने की सजा अनन्त आग की झील में मौत है।

-यहाँ आठवीं आज्ञा है जो परमेश्वर ने दी है:

आइए पढ़ें निर्गमन 20:15

15- "तू चोरी न करना।"

-आठवीं आज्ञा में, परमेश्वर हमें चोरी न करने की आज्ञा देता है।

-हमें दूसरे व्यक्ति का सामान क्यों नहीं चुराना चाहिए?

-क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें अपनी संपत्ति का अधिकार दिया है।

-परमेश्वर के अनुसार, अगर हम किसी दूसरे व्यक्ति का सामान चोरी करने के बारे में सोचते हैं, तो हमने क्या किया है?

-परमेश्वर कहते हैं कि अगर हम किसी दूसरे व्यक्ति का सामान चोरी करने के बारे में सोचते हैं, तो हमने उन्हें चुरा लिया है।

-जब हम किसी अन्य व्यक्ति की संपत्ति को देखते हैं और उन्हें लेना चाहते हैं, तो हम इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-परमेश्वर कहते हैं कि सभी लोगों ने इस आज्ञा को तोड़ा है।

-इस आज्ञा को तोड़ने की सजा अनन्त आग की झील में मौत है।

-यहां नौवीं आज्ञा है जो परमेश्वर ने दी है:

आइए पढ़ें निर्गमन 20:16

16-“तू अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना।”

-नवीं आज्ञा में, परमेश्वर हमें झूठ नहीं बोलने की आज्ञा देते हैं।

-हमें झूठ क्यों नहीं बोलना चाहिए?

-क्योंकि झूठ परमेश्वर से नहीं हैं।

-क्योंकि झूठ पाप और शैतान से है।

-परमेश्वर के अनुसार, अगर हम सच जानते हैं फिर भी इसे बताने में असफल होते हैं, तो हम क्या कर रहे हैं?

-परमेश्वर कहते हैं कि जब हम सच जानते हैं फिर भी उसे बताने में असफल होते हैं, तो हम झूठ बोल रहे हैं।

-परमेश्वर कहते हैं कि जब हम सच जानते हैं लेकिन यह सब नहीं बताते हैं, तो हम झूठ बोल रहे हैं और इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-परमेश्वर कहते हैं कि सभी लोगों ने इस आज्ञा को तोड़ा है।

-इस आज्ञा को तोड़ने की सजा अनन्त आग की झील में मौत है।

-यहां दसवीं आज्ञा है जो परमेश्वर ने दी है:

आइए पढ़ें निर्गमन 20:17

17- “तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। तू अपने पड़ोसी की पत्नी, या उसके दास या दासी, उसके बैल या गधे, या अपने पड़ोसी की किसी भी चीज़ का लालच नहीं करना।"

-दसवीं आज्ञा में, परमेश्वर हमें आज्ञा देता है कि दूसरे लोगों के पास जो कुछ है उसे न चाहें।

-हम क्यों नहीं चाहते कि दूसरे लोगों के पास क्या है?

-क्योंकि खुद परमेश्वर ने दूसरों को दिया है।

-जब हम चाहते हैं कि दूसरे लोगों के पास क्या है, तो हम इस आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

-परमेश्वर कहते हैं कि सभी लोगों ने इस आज्ञा को तोड़ा है।

-इस आज्ञा को तोड़ने की सजा अनन्त आग की झील में मौत है।

-ये वे दस आज्ञाएँ हैं जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को दी थीं।

-वे आज्ञाएँ जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को दीं वे आज्ञाएं हैं जो परमेश्वर सभी लोगों को देता है।

-कोई भी परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पूरी तरह से पालन नहीं कर सकता।

-हम सभी ने परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ा है।

-यदि हम एक को छोड़कर परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो परमेश्वर क्या कहता है?

-परमेश्वर कहते हैं कि ऐसा लगता है कि हमने उनकी सभी आज्ञाओं की अवहेलना की थी।

-परमेश्वर की दस आज्ञाओं को तोड़ने की सजा क्या है?

-अनन्त अग्नि की झील में मृत्यु।

-परमेश्वर की सिर्फ एक आज्ञा को तोड़ने की सजा क्या है?

-अनन्त अग्नि की झील में मृत्यु।

-कितनी बार शैतान ने परमेश्वर की अवज्ञा की, इससे पहले कि परमेश्वर ने शैतान को स्वर्ग से भेजा और उसके लिए अनन्त आग की झील तैयार की?

-सिर्फ एक बार।

-शैतान ने केवल एक बार पाप किया, फिर भी परमेश्वर ने उसे मौत की सजा दी।

-कितनी बार शैतान का अनुसरण करने वाले स्वर्गदूतों ने परमेश्वर की अवज्ञा की, इससे पहले कि परमेश्वर ने उन्हें स्वर्ग से भेजा और उनके लिए अनन्त आग की झील तैयार की?

-सिर्फ एक बार।

-शैतान का अनुसरण करने वाले स्वर्गदूतों ने केवल एक बार पाप किया, फिर भी परमेश्वर ने उन्हें मौत की सजा दी।

-कितनी बार आदम और हव्वा ने परमेश्वर को अदन की वाटिका से बाहर भेजने से पहले परमेश्वर की अवज्ञा की?

-सिर्फ एक बार।

-आदम और हव्वा ने केवल एक बार पाप किया, फिर भी परमेश्वर ने उन्हें मौत की सजा दी।

-परमेश्वर इतने पवित्र हैं कि सिर्फ एक पाप को भी मौत की सजा मिलनी चाहिए।

-परमेश्वर की आज्ञाएं एक दर्पण की तरह हैं।

-परमेश्वर की आज्ञाएं दर्पण की तरह कैसे हैं?

-परमेश्वर की आज्ञाएं हमें हमारे पाप को देखने में मदद करती हैं।

-परमेश्वर की आज्ञाएं हमें हमारे पाप दिखाती हैं।

-परमेश्वर ने हमें अपनी आज्ञाएं क्यों दीं?

-हमें हमारे गंदे, पापी दिल दिखाने के लिए।

-जिस तरह एक आदमी अपना गंदा चेहरा तब तक नहीं देखता जब तक वह आईने में नहीं देखता, उसी तरह हम अपने गंदे, पापी दिलों को तब तक नहीं देखते जब तक हम परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं देखते।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को उनके गंदे, पापी हृदय दिखाने के लिए अपनी आज्ञाएँ दीं।

-परमेश्वर ने सभी लोगों को उनके गंदे, पापी दिल दिखाने की आज्ञा दी।

-क्योंकि हमारे हृदय गंदे और पापी हैं, इसलिए हम परमेश्वर के निकट आने के लिए कुछ नहीं कर सकते।

-क्योंकि हमारे दिल गंदे और पापी हैं, हम खुद को परमेश्वर के लिए स्वीकार्य बनाने के लिए कुछ नहीं कर सकते।

-हम अपने गंदे, पापी दिलों को कभी साफ नहीं कर सकते।

-कौन अकेला हमारे गंदे, पापी दिलों को साफ कर सकता है?

-केवल परमेश्वर।